चक्रव्यूह

डॉ० दिनेश गोस्वामी

प्रकाशक
अखिल भारतीय साहित्य कला मंच,
मुरादाबाद (उ०प्र०)

प्रकाशन	:	चन्द्रा प्रकाशन, मुरादाबाद (उ० प्र०) : 0591 - 358841
सर्वाधिकार	:	डॉ० दिनेश गोस्वामी
मूल्य	:	रू० 100 सजिल्द
प्रथम सस्करण	:	2000 ई०
वितरक	:	अ० भा० साहित्य कला मच, मुरादाबाद (उ० प्र०) 0591-413111
सहवितरक	:	सिन्डिकेट बुक डिपो, बरेली
लेजर टाइपसैटिंग	:	कुमार कम्प्यूटराइज्ड प्रिंटर्स 186, चिम्मन–बजरिया, चॉदपुर (बिजनौर) उ० प्र० : 01345 - 21119
मुद्रक	:	आर० के० ऑफसैट 1617–ए/1ए उल्धनपुर नवीन शाहदरा, दिल्ली–32 011-2127748

CHAKRAVYUH
BY DR. DINESH GOSHWAMI

Price

प्राक्कथन

भारतीय वाड:मय में महाभारत बहुत उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित है इसे पंचम वेद भी कहते हैं एवं सुविज्ञों व वेदों सम ही समादृत है! चारो ही पुरूषार्थ इसमें निरूपित है जिन्हें जन सामान्य अर्थ, काम, धर्म एव मोक्ष को जानने को जिज्ञासु रहता है, संसार का सर्वोत्तम ग्रंथों में से एक भगवद्गीता अर्थात भगवान का गीत भी महाभारत में समन्वित है।

सत्य सर्वदा शाश्वत् है, देश-काल एवं परिस्थितियों के कारण उसका स्वरूप रूपांतरित होता रहता है। महाभारत का प्रत्येक प्रसंग आज भी जीवंत हैं, यह सच्चा इतिहास भी है कोई घटना अतिरंजित नहीं है। इसके रचनाकार महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास जी है। जिन्होंने प्रतीको के माध्यम से राजधर्म, वर्णाश्रम धर्म आपद्धर्म श्राद्ध व मोक्षधर्म का वर्णन तथा सारभूत इतनी सहजता, सरसता व सुन्दरता से अलंकृत करके सहज भाव से जन सामान्य को समझाया है कि मुझ जैसा अल्पज्ञ उसे वर्णित करने में स्वयं को असमर्थ पाता है।

प्रतीकों तथा घटनाओं की व्याख्या हेतु सूक्ष्मदृष्टा मर्मज्ञ मनीषियों की आवश्यकता है जो घटित घटनाओ के संदर्भो को आधुनिक युग म उनका समन्वय करके हमे मार्गदर्शन दे सके।

ज्ञान के अनंत अगम सागर तल मे पहले उतरना पड़ता है फिर रत्न खोजने पडते हैं, रत्नाकार की ऊपरी सतह पर तो फेनिल उर्मियाँ एव गीली रेत अतिरिक्त तो कुछ भी नही मिलता! महाभारत रत्नाकर मे जब-जब गोता लगाता हूँ, डूबता हूँ तो शख सीपियों के साथ-साथ मुक्ता-माणिक भी यदा-कदा प्राप्त हो जाते है! यद्यपि सम्पूर्ण ग्रंथ का शब्द-शब्द सार गर्भित है किन्तु दो प्रसंगो न मुझे मार्मिक पीड़ा दी है! एक हैं पांचाली का चीर हरण जिसके माध्यम से महर्षि ने रूपवती गुणवती अयोनिजा अग्निकुण्ड से जन्मी संसार में चार अद्वितीय स्त्रियो मे एक, सर्वश्रेष्ठ धर्नुधर अर्जुन की पत्नी, कालजयी भीष्मपितामह की कुलवधु जो सकल सृष्टि में अपराजेय थे।

रणकौशल में अद्भुत-अनुपम आचार्य द्रोण जिनके कर मे

अस्त्र-शस्त्र रहते हुए देवराज इन्द्र व देव सेनापति कार्तिकेय भी पराजित नहीं कर सकते। सूर्य सरीखे उज्ज्वल भारतवंश की रानी, महाराज द्रुपद की दुहिता धृष्टद्युम्न की भगिनी एवं कुलगुरू कृपाचार्य के सम्मुख राज्य सभा मे दुर्जन दुःशासन के द्वारा दुष्ट दुर्योधन के आदेश से निर्वस्त्र की जा रही थी, उसकी अस्मिता का अपहरण हो रहा था और यह कालजयी, अपराजेय ब्रह्माण्ड विजेता निर्निमेष इस क्रूर कलंकित दुष्कृत्य को देख रहे थे!

यह प्रसंग देखकर मेरा हृदय चीत्कार कर उठता है, दानवीर कर्ण भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, सब के सब बौने हो जाते हैं जो शरणागत असहाय अपनी ही कुलवधु के करुण पुकार न सुन सकें। इनकी स्थिति अधर्मी दुःशासन व दुर्योधन के समक्ष दीन-हीन निरीह प्राणी अथवा मूक बधिर पंछी-सी हो गई।

ऐसी अधर्म की पराकाष्ठा जब हो जाती है। तो योगेश्वर सर्वज्ञ परमात्मा पुराय आत्मा की रक्षा करता है। महर्षि ने इस प्रसंग से स्पष्ट किया हैं कि नियति नियन्ता बलवान है, सर्वशक्तिमान सौन्दर्यवती रानी की अस्मिता भी प्रभु कृपा बिन सुरक्षित नहीं रह सकती तथा भीष्म द्रोण, कर्ण और दुर्योधन-दुःशासन का काल कुछ क्षणों में निश्चित हो गया।

भरतवंश की कुलवधू अपमानित व विवश हो सकती हैं तो भला समाज में साधारण स्त्री की कैसी दुर्दशा होती है यह समझा जा सकता है। यह आज भी ध्रुव सत्य है। केवल पात्र बदले दुर्योधन दु शासन के मुखौटे रूपान्तरित हुए है। अनेक द्रुपद दुहिताओं का सतीत्व हरण नित्य-प्रति होता हैं एवं धृतराष्ट्र की भाँति अंधा-शासन प्रशासन देख नहीं पाता। कानून अंधा है।

कानून के पहरुए भीष्म-द्रोण की भाँति मूक बधिर बन जाते हैं। दुष्ट दुर्जन दुःशासन दुर्योधन राजतंत्र के प्रतीक लोकतंत्र में भी लाज लूटते हैं। नैना साहनी तन्दूर काण्ड जैसी एकाध घटना प्रकाशित हो पाती है। यह वर्तमान युग में महाभारत की सार्थकता है। कौरवों की संख्या सौ थी, पाण्डव पाँच; यही अनुपात आज भी है जिसे महर्षि ने हजारों वर्ष

पूर्व निश्चित कर दिया था। उन पाँच मे जो सबसे अधिक भ्रष्ट होता है उसे धर्मराज की उपाधि से विभूषित होता है जैसे युधिष्ठर जिन्होंने

अनुज वधू, भगिनी सुत नारी
जे समझों कन्या सम चारी!

रामायण के इस सुक्ति को बिसरा दिया और अपने अनुज की वधू द्रोपदी के सौन्दर्य से वशीभूत होकर अर्जुन की भार्या द्रोपदी को अपनी भार्या स्वीकार कर लिया और अपने समर्थन में अपनी माँ कुन्ती के आदेश पालन को अपनी ढाल बना लिया। अर्थात् पाँच धर्मात्माओं में भी जो सबसे कुटिल होता है वो परम आदरणीय होता है भले ही उसके कारण सभी को वनवास भोगना पडे, अपने अस्त्र-शस्त्र व स्वणिम रत्न जड़ित किरीट गँवाने पड़े।

आज ऐसे त्रिकालदर्शी ऋषि दुर्लभ हैं इसी कारण महाभारत-सा ग्रंथ दूसरा अवतरित नहीं हुआ।

यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानि भवति भारत:
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्हयम्!
चारित्राणय साधूनाम विनाशाय च: दुष्कृताम्
धर्म संस्थानापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे!

अर्थात् जब जब धर्म का पतन होता है तो मैं अधर्म के नाश के लिए या धर्म के उत्थान के लिए, सज्जनों के दुख दूर करने हेतु, दुष्टो के विनाश के हेतु मै, युग-युग में अवतरित होता हूँ।

मेरी अल्पज्ञ बुद्धि में भीष्म, द्रोण, कर्ण व अश्वत्थामा मानवता के अपराधी हैं, भीष्म ने तो बाणों की शैय्या पर जिनमे रोम-रोम घायल था जिनका अनुक्षण मर्मान्तक पीडा भोग कर अपने अपराधो का दण्ड भोगा।

द्रोण, कृपाचार्य एवं अश्वत्थामा तो धृतराष्ट्र अथवा दुर्योधन के दास सरीखे ही थे भले ही उन्हें कुलगुरू कृपाचार्य अथवा महाधर्नुवेद विज्ञानी गुरुवर द्रोण सम्बोधित किया जाता हो पर उनकी स्थिति दास अथवा ऋणी से अधिक नहीं थी जबकि द्रुपद को पराजित करके आचार्य द्रोण को अर्जुन ने ही विजय-श्री का उपहार एव दुर्पद का राज्य अर्जुन ने ही उन्हें उपहार में दिया था किन्तु! उन्होंने किस कारण, किन

परिस्थितियो में कौरवों का सेनापति बनना स्वीकार किया एवं दुर्योधन के साथअपने पुत्रवत् शिष्य अर्जुन के विरूद्ध युद्ध किया। यह विद्वानो के शोध का विषय है।

यह महापुरूष किस कारण अनैतिक आचरण के पक्षधर हुए यह मेरी मदबुद्धि से परे है। हाँ! भीष्म ने अंत नें पश्चाताप किया है कि राष्ट्र से बड़ी कोई प्रतिज्ञा नहीं होती! मेरी भीष्म प्रतिज्ञा का परिणाम है 'महाभारत' किन्तु समय बीतने के उपरान्त जब भरतवश का सूर्य अस्त हो रहा था।

महाभारत का द्वितीय प्रसंग मार्मिक वेदना देता है, जो असहनीय है वो है अभिमन्यु वध जिसकी कल्पना मात्र से रोम-रोम सिहर जाता हे जिसमें सकल सृष्टि के श्रेष्ठ रणबॉकुरों ने जिसमें कर्ण-सा दानवीर धर्मात्मा भी था, द्रोणाचार्य जैसा अस्त्र शस्त्र ब्रह्म विज्ञानी ब्राह्मण और यह दोनों शस्त्र-शास्त्र के परम श्रद्धेय ऋषि परशुराम शिष्य थे साथ-साथ उनका पुत्र अश्वत्थामा और उनके पत्नी के भ्राता कुलगुरू कृपाचार्य महायुद्ध में निर्मित युद्ध की आचार संहिता धर्म के आचार्यो द्वारा विस्मृत हुई और एक बालक पर सात-सात महारथी टूट पड़े, इनके दुष्कृत्यों को विलोक धर्म कितना रोया होगा; मानवता कितनी बिलखी होगी।

यह भारतीय धार्मिक इतिहास का ऐसा कलंकित पृष्ठ है जिसे पढ़कर मानवता हृदयविदारक स्वरों में चीत्कार कर उठती है। झर झर आँसू रोके नहीं रुकते। एक निशस्त्र निराश्रय विवश अपने ही कुलदीपक का वध! यह भी महापाप की पराकाष्ठा है।

मैं अपने इस खण्डकाव्य शीर्षक 'अभिमन्यु वध' रखने का विचार रखता था किन्तु मेरी अंतरात्मा इस शीर्षक से काँपने लगी तो मैंने अपने आपको सयंत कर **'चक्रव्यूह'** नाम दिया।

मन में प्रश्न उठता हैं कि सर्वज्ञ योगेश्वर कृष्ण कौरवों की रणनीति समझ नही सके। नही .... यह असम्भव हैं कृष्ण प्रत्येक स्थिति से भली भाँति परिचित थे। किन्तु! विधि का विधान अटल है;

होनहार भावी प्रबल बिलख कहयो मुनिनाथ!
हानि-लाभ जीवन-मरण यश-अपयश विधि हाथ!

फिर भगवान कृष्ण नश्वर देंह के अनश्वरता हेतु विधि विधान मे बाधक क्यों बनते?

अन्तरमन चीत्कार करता हैं, पापियों को धिक्कारता हैं, महाबली योद्धाओं को श्राप देता हैं पर शीश धुनने के उपरांत एक ही निष्कर्ष पर पहुँचते है।

कर्मणोवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन्!

अर्थात् कर्म हमारे अधिकार में हैं फल प्रभु प्रदान करते हैं। अतएव निष्काम भाव से कर्म किए जाओ!

पात्रता अर्जित करो; प्रतिफल स्वयं प्राप्त हो जाएगा मेरी मान्यता है कि ईश्वर किसी के श्रम व साधना को व्यर्थ नहीं होने देता। सर्वज्ञ शक्तिमान से तुम बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं अतएव विधाता को तुम्हारी अभिलाषा ज्ञात है पर पात्रता अर्जित करने पर प्राप्त होगी तथा उचित समय पर .....! परमात्मा स्वयं देने को उत्सुक है, या तो पात्रता नही है, अथवा हमारा पात्र उल्टा रक्खा हुआ है या उसमें पहले से ही इतना कचरा भरा है कि प्राप्त फल का स्थान ही नहीं है।

मेरी यह काव्य कृति जिसका मूल्यांकन सुविज्ञ जन करेगें। 'चक्रव्यूह पौराणिक आख्यान है' मूल कथानक में कहीं परिवर्तन का साहस मै नहीं कर सका हाँ पात्रों के चरित्र-चित्रण में कटु सम्वेदनाए व मृदु भावनाएं मानवीय मूल्यों से जुड़ती एवं टूटती रही हैं। काव्य-सौन्दर्य अभिवृद्धि के निमित्त शब्द-शिल्प संयोजन में अभिनव प्रयोग अवश्य किए हैं!

आशा है सुधिजन को पढ़कर आनन्द अनुभूति होगी एवं व अपने अमूल्य सुझावों से मेरा मार्ग दर्शन करेंगे।

15, अगस्त, 2000

डॉ० दिनेश गोस्वामी

प्रथम सर्ग

देवो मे देवेन्द्र सरीखे
भरतवश मे नृप निष्णात
सूर्य प्रभा-सी काति-कात मे,
पाण्डु अतिरथि अति विख्यात्!

अतिशय आतुरता मृगया की
मिटा गई सौभाग्य सुरेखा,
पाडु बने वनवासी पल मे
विधि-विधान का अद्भुत लेखा!

दृगविहीन धृत्तराष्ट्र शीश को
प्रबल भाग्य पहिनाए ताज,
स्वर्ण सुशोभित साम्राज्य के
धृत्तराष्ट्र बनले महाराज।

उदित प्रबलत्तम भाग्य प्रभाकर
दृष्टिहीन को देता राज,
कौन सृष्टि में भव सृष्टा के
जान सका है कौतुक काज।

अनायास नृप पाडु अभागे
असमय हुए काल के ग्रास
वसुधरा को पचपुत्र दे
नृप ने ली थी अंतिम श्वास।

धृत्तराष्ट्र अधे महीप थे
गाधारी महिषी के साथ
सहस पूत दे महारानी को
महाराजा ने किया कृतार्थ।

बाल ब्रह्मचारी गगासुत
कभी न सोए सुख की सेज,
परशुराम ने जिनके सम्मुख
द्वन्द युद्ध में खोया तेज।

कालजयी वह भीष्म पितामह
भव-भूतल मे शूर अजेय,
शतगजबल सम्पूर्ण गात मे
यशोगान त्रिभुवन में गेय।

ममतामय मधुवनी छाव थी
भीष्मपिता के शुभ-आशीष
नवयौवन द्युतिमान तेज से
उन्नत भाल पाण्डु सुत शीश

धृतराष्ट्र नृप दृष्टिहीन थे
पूज्य पिता के अग्रज तात,
सहस सुतो के जनक जगत मे
पंच पाण्डवो के शत्रु भ्रात।

सहस पूत अधे महीप के
कुरुवंशज कहलाते कौरव
चरणो मे उनके नतमस्तक
सकल सृष्टि का वैभव, गौरव।

कौरव कुल कौशल कुलीनता
कौन्तेय सम क्षुद्र मलीन,
दिव्य दिवाकर सम्मुख जैसे
ज्योति दीप की लगती दीन!

ज्येष्ठ पूत दुर्जन दुर्योधन
दु.शासन दूजे का नाम,
कुटिल हृदय, विद्वेष भावना
दोनो के उर मे अविराम।

शत सपूत अधे महीप के
गौरव-वैभव पाकर हीन,
पाण्डु पुत्र दैदीप्य तेजबल
रणकौशल मे पूर्ण प्रवीन।

सुबलि पूत वह मातुल शकुनी
भरतवंश का सोचे नाश
दुर्योधन की हीन भावना
चाहे अपना वंश विनाश।

वरणावत मे विस्फोटक से
लाक्षागृह करके निर्माण,
दुर्योधन दुर्बुद्धि शकुनि ने
हरने चाहे पाण्डव प्राण।

गुह्य-द्वार भूगर्भ विनिर्मित
यत्न युक्ति से रक्षित प्राण,
गहन गुहा से किया पलायन
दग्ध ज्वाल से पाया त्राण।

विदुरनीति ने प्राण बचाए
कुंती के कानन मे लाल,
कीर्ति कलंकित कुरुवंशज की
विधि-विधान ने टाला काल।

पगतल बढते वरणावत से
पाण्डव पहुँचे सुरसरि तीर,
गहन तिमिर जलधार पार कर-
दूर हुई अंतर की पीर।

अगम अपरिचित अरण्य अचल
कुंती जननी सदा समीप,
कौतुक भाग्य विधाता का था
भू पर सोते मही, महीप।

कुश कटक का कठिन बिछौना
शीश खुले पर छत आकाश
कहाँ दीखता सघन वनों में?
दूर–दूर तक दिव्य प्रकाश।

भीम बली प्रहरी–से जागें
व्याघ्र–व्याल बहु करें निवास
असुर हिडिम्बासुर करता था
उस अरण्य मे सुख से वास।

असुर हिडिम्बक को निहारकर
भीम हो उठे अतिशय क्रुद्ध
दुर्जय निशिचर से करते थे
भीम अकेले अविरल युद्ध।

असुर हिडिम्बक बध कर डाला
अति बलशाली अतुलित भीम,
असुरराज की भगिनि हिडिम्बा
मोहित लख भुजबल निस्सीम!

प्रणय प्रार्थना करे भीम से
अन्तरमन में जगा अनग,
रूप रंग सौन्दर्य अनल से
भीम बली के सुलगे अग।

पूज्य मातु के शुभाशीष ले
सुघड हिडिम्बा भीम भार्या
क्षत्राणी-सा श्रेष्ठ आचरण
शुचि वनिता बन गई अनार्या।

एक क्षुद्र चक्रानगरी में
पाण्डु पुत्र का पड़ा पडाव,
राजवंश के राजकुँवर को
जीवन का हर एक अभाव।

जग-जीवन में कहाँ ठहरता?
सचल समग्र का सतत प्रवाह,
राजपुत्र वह भिक्षुक बनकर
जीवन निज करते निर्वाह।

द्रुपदसुता का रचा स्वंयवर
आयोजक पंचाल नरेश
देश-देश के नृप सपूत से
आलोकित सम्पूर्ण प्रदेश।

खिली कुमुदनी की पखुडियाँ
द्रुपदसुता के अरुणिम नैन,
घनी घनेरी श्यामल अलकें
लख प्रतियोगी हो बेचैन।

पर्वत के उतुंग शिखर से
उभरे उन्नत पुष्ट उरोज,
अधर-अधर पर अरुणिम आभा,
नील-झील में खिले सरोज!

अर्धचन्द्र-सी वक्र भृकुटियाँ
मनभावन घुँघराले केश,
द्रुपदसुता को वरने आए
भूमण्डल के शूर नरेश।

खुले-अधखुले सीपी सम्पुट
श्यामल-श्वेत सुशोभित मोती,
अर्ध अनावृत दृग से फूटे
प्रखर चंचला-सी दृग ज्योती!

स्वर्ण अलंकृत आभूषण थे
मृदु मृणालिनी-सी बाँहों में,
कामवासना बसी हुई थी
महा महीपों की चाहों में।

वरने आए पंचाली को
पाण्डव जन बन ब्रह्म कुमार,
तप्त हेम तन तरुण तपस्वी
दे ों की प्रतिमा साकार।

सघन भरा द्रव वृहत पात्र मे
ऊपर चालित विद्युत मीन,
विम्ब निरख दृग शर से बींधे
वरे द्रोपदी वही प्रवीन।

धनुष धनुर्धर उठा न पाए
किस नृप का होता-अभिषेक?
लक्ष्य भेदने मे असफल थे
अखिल विश्व के शूर अनेक

दुर्योधन हत् गिरा धरा पर
हॉफ रही थी हारी श्वास,
पचाली पाना था सपना
बिखरा कौरव का विश्वास।

दुर्योधन दुर्दशा देखता
दौड़ा लक्ष्य भेदने कर्ण,
मै न वरुँगी सूत पूत को
इसका निम्नवश लघु वर्ण।

असह वचन सुन द्रुपदसुता के
मुखमण्डल हो गया विवर्ण,
धनुष-वाण धर भग्न हृदय से
अपमानित हो लौटा कर्ण!

जरासध शिशुपाल शल्य नृप
निर्बल जन-से विवश निराश,
अपने-अपने राजमहल को
लौटे सारे शूर हताश!

हलचल राज्यसभा मण्डप में
लख केहरि-सा ब्रह्मकुमार,
एक वाण से लक्ष्य भेदकर,
किया द्रोपदी पर अधिकार!

कृष्णा ने बढ़ मनोयोग से
स्वर्णिम पहिनाई वरमाल,
गौरवान्वित था शौर्य गर्व से
पाण्डुपुत्र का उन्नत भाल!

द्रुपदसुता वर विजय वरण से
क्षत्रिय कुल मे फैला रोष
ब्रह्म कुमारों को डसने को
बढ़ता अपयश का आक्रोश

एक प्रहर मे प्रबल पराजित
क्षत्रिय भागे मडप छोड,
अपने एक अचूक वाण से
अर्जुन, कर्ण धनुष दे तोड।

स्वर्णजडित स्तंभ उखाड़े
बहुँवीरो से जूझे भीम,
गर्वित थे बलराम-कृष्ण लख
भुजबल पाडव का निस्सीम।

यदुनदन के सत्य वचन सुन-
हर्षित थे पंचाल नरेश,
धृष्टधुम्न कृष्णा का भ्राता
आनन्दित हो उठा विशेष।

पाण्डु पुत्र जीवित भू-तल पर
ब्रह्मवेष में करे निवास,
सुन्दर समाचार शुभ पहुँचा
भीष्मपिता के पल मे पास।

सुमन-सुमन से सजे सुशोभित
नगर-नगर के तोरण द्वार
भव्य स्वागतम् को आतुर थी
द्वार-द्वार की वदनवार।

चक्रा नगरी त्याग पाण्डव
भीष्मपिता के लौटे पास,
वृद्ध दृगो में थके भीष्म के
जागा नवजीवन उल्लास।

धृत्तराष्ट्र ने विवश हृदय से
दिया सपूतो को आशीष,
द्रुपदसुता सौन्दर्य साथ मे
दुर्योधन का अवनत शीश।

भीष्मपितामह शुभाशीष दे
पाण्डु-पुत्र को करें कृतार्थ,
तातश्री ने जन-जन भय से
इन्द्रप्रस्थ दे दिया यथार्थ।

प्रवल पराक्रम विजयश्री पा
सचित कर कुबेर-सा कोष,
दिगदिगत मे लगा गूँजने
वीर पाण्डवों का जयघोष।

इन्द्रप्रस्थ में मय दानव ने
शुभ्र स्वर्णमय रच प्रासाद,
द्वार भव्य चित्रित प्राचीरे
निरख तिरोहित हृदय विषाद।

भीष्मपिता की अनुकपा से
पाण्डु सुतो को मिला सुराज,
शुभ्र किरीट मणि माणिकरजित
धर्मपुत्र निज धरते आज।

आदृत अग्रज शुभाशीष से
आज युधिष्ठर थे महाराज
इन्द्रप्रस्थ मे मनोयोग से
करने लगे राज के काज।

राजसूय शुचि सुभग यज्ञ का
युधिष्ठर ने किया विचार
मधुसूदन सद्परामर्श था
भीष्म पितामह को स्वीकार।

उच्च चतुर्दिक जय ध्वज फहरें
वेदव्यास जी का धर ध्यान,
राजसूय अनुपमेय यज्ञ का
ऋषि से जाना विधी-विधान।

सजग सुरक्षा सीमाओं की
अर्जुन अधिनायक आधीन,
अपने गुरुवर द्रोण सरीखे
रणकौशल मे पार्थ प्रवीन।

अर्जुन अग्रज महाबली थे
जग में भुजबल अतुल असीम,
महाराजा के रक्षक रहते
प्रतिछाया से भ्राता भीम।

रथ-तुरंग गज बल के पालक
अनुज नकुल-भ्राता सहदेव,
राज्य कार्य की सुभग व्यवस्था
सत्य-धर्म करता स्वमेव!

गौरव बल वैभव के सम्मुख
शीश झुकाए सब ससार,
मुख्य-अतिथि पद परम प्रतिष्ठित
प्रभु को पाने का अधिकार।

वेदमंत्र शुचि सुभग ऋचाएँ
यज्ञ हुआ अनुपम प्रारम्भ,
किंतु। कुमति शिशुपाल भूप की
अनायास ही जागा दंभ!

नृप दुर्वचन कहे माधव को
विविध भाँति डाला व्यवधान,
अहंकारवश करे कामना
पूर्ण न हो शुचि यज्ञ विधान।

अहंकार मद लोभ क्रोधवश,
दुर्जन सत्कर्मों को भूल।
अपना ही अस्तित्व मिटाते
सफल मिटाते राज्य समूल।

माधव को कटु बचन उचारे
अहकार मद मे शिशुपाल,
मदिर अध शिशुपाल शीश पर
मडराता था निर्मम काल।

अकस्मात् ही यदुनदन की
तनी भृकुटियाँ दोनों वक्र,
उठी तर्जनी, लगा घूमने–दुर्जय
दुर्जन काल, सुदर्शन चक्र।

हवनकुण्ड प्रज्ज्वलित अर्चियाँ
आहुतियाँ देते अवनीश,
चक्र सुदर्शन उधर काटता
दभी नृप का पल मे शीश।

शीश काट शिशुपाल, कृष्ण ने–
हरी यज्ञ की बाधा मूल,
भीष्म–युधिष्ठर आल्हदित थे
दुर्योधन का मन प्रतिकूल।

बरबस, नील सरोवर जल में
डूबे अध पुत्र के अंग,
दुर्योधन के दृग को दीखा
नील वर्ण का भूतल रंग।

विहंस पड़ी लख दृश्य द्रौपदी
बोली 'राह दिखाओ दूत,
अंधपिता ने जनमा जग में
निःसंदेह निज अधा पूत!

पावक सुलगी कलुष हृदय में
पाण्डव उर में नव उल्लास,
दुर्योधन, दुःशासन शकुनी
भूले निद्रा भोग विलास!

शीश कटा शिशुपाल शूर का
सिहरे दुर्जन वीर महीप,
चतुर कृष्ण ने बुझा दिया था
प्रबल पाप का प्रखर प्रदीप

गूँज उठी थी राजाओं मे
धर्मराज ने पाया राज,
वसुधरा का बोझ घटा था
सुखद नृपो का सभ्य समाज!

दुर्जन नीति कुटिल खल कमी
कहाँ जानते नीति-अनीति?
उर मे दुर्जन दुष्कामी के
कभी न रहती पावन प्रीति।

शकुनि छली के नागपाश में
फंसे अभागे अनुपम वीर,
बिछे द्यूत के क्रीड़ागन मे,
वैभव खो बैठे रणधीर।

सम्मोहनीय इन्द्रजाल-सा
द्यूत व्यसन का मोहक जाल,
द्यूतपाश के तार-तार मे
नर्तन करता निर्मम काल।

चतुर शकुनि की कुटिल नीति ने
पाण्डु पुत्र के छीने ताज,
अस्त्र-शस्त्र धर दिए दॉव मे
निर्धन हीन युधिष्ठर आज।

द्रुपद सुता को धरा दॉव में
हारी भरत वंश की लाज,
भाग्य प्रबल हो गया अभागा
व्यंग कररहा सभ्य समाज।

धर्मपुत्र असहाय अकिंचन
वैभवशाली खोया राज,
इंद्रप्रस्थ में दुर्योधन के
दास बन गए थे महाराज।

भू-पति भूमिहीन चरणों मे
दुर्योधन चरणो के दास,
विजित स्वर्णमय गौरव-वैभव
कौरव कुल के आया पास।

राजवंश की सुता द्रौपदी
इद्रप्रस्थ की राज्य स्वामिनी,
भरतवंश की सुभग कुलवधू
पंच शूर की सुघड़ भामिनी!

भीष्म-द्रोण कुलगुरू मौन थे
बधिर बना वो कर्ण महान,
धृत्तराष्ट्र नृप स्वयं विराजित
बहुँ अजेय योद्धा बलवान।

मूक वधिर से रहे निरखते
महारथी वन दुर्बल दीन,
तेजवंत स्वामी के सम्मुख
दास अभागा हो ज्यो हीन।

धर्नुवेद आचार्य द्रोण-कृप
भीष्म भुवन मे थे विख्यात।
दुर्योधन-दु:शासन पर वह
कर न सके अपना आघात?

धर्मपुत्र की द्यूत पराजय
पखहीन पछी-से भीम,
विवश क्लीव-सा व्याकुल होता
अर्जुन धनुधर बल निस्सीम।

भीष्म पिता क्यों रहे निरखते?
दुर्योधन का अधम आचरण
दु शासन के काट करों को
कुल वधु को अपनाते तत्क्षण।

व्यर्थ सकल धनु-वाण द्रोण के
कृपाचार्य भूले धनुर्वेद,
अबला का अपमान निरख कर
जगा न अतर मे निर्वेद।

कहॉ खो गई धनुष-वाण की?
प्रत्यंचा की वो टंकार,
पंचाली की सुन न पाए
महादेव दुख भरी पुकार,

कृपाचार्य जी कुल के गुरूवर
हुए विस्मरण कर्म पुनीत,
याश–गौरव शुभ–पावनता की
कहे कहानी दुखाद अतीत!

अबला शरणागत नारी ने
रणवीरो का बल धिक्कारा,
करुण स्वरों से करुणामय को
कृष्णा ने फिर हो विवश पुकारा!

आर्तनाद सुन धाए माधव
दु:ख हरण करते भगवान।
प्रभु की परम कृपा करुणा से
बचा द्रौपदी का सम्मान!

सत सतित्व का घोर अनादर
भूतल पर मँडराया काल,
वेदव्यास जी जान गए थे
भू होगी शोणित से लाल!

पाण्डु–पूत का दु.खद पराभव
वर्ष त्रयोदश का वनवास,
सघन वनो की गहन गुफाएँ
पाण्डवजन का बनी निवास!

आत्मग्लानि मय अवनत मुखडे,
प्रबल पराजय का दुर्बोध,
आशंकित उर मे सुलगा था
पल-पल पलता था प्रतिशोध।

जंगल-जंगल फिरे भटकते
वर्ष द्वादश किए व्यतीत,
मन-प्राणों को डँसता रहता
भाग्यहीन का भव्य अतीत।

एक वर्ष अज्ञातवास का
कहाँ सुरक्षित बने प्रवास,
विविध वेष में नृप विराट के
राजनगर मे किया निवास।

मनमोहक मधुमय प्रसग नित
धर्मराज थे उन्हें सुनाते,
हास्य-व्यंग के प्रहसन अभिनय
कह, राजा को सुखी बनाते।

पाक कला की, कला वृकोदर
राज रसोई मे दरशाते,
मधुर सुगंधित नूतन व्यंजन
प्रीतिभाव से स्वयं खिलाते।

नृत्य, गीत, संगीत सीखती
राजभवन मे राजकुमारी,
वृहन्नला वन क्लीव वेश मे
नृत्य गुरू अर्जुन धनुधारी।

जिनके धनुष-बाण के सम्मुख
शीश झुकाए भू-बलवीर,
महादेव को तृप्त कर चुके
जिस धनुधर के पैने तीर।

सबल तुरंगों को शिक्षण दें
भ्राता यमज नकुल-सहदेव,
एक वर्ष अज्ञातवास मे
दूर-दूर सब रहे सदैव।

वृहत् राजसत्ता भू-स्वामी
क्षुद्र राज्य में दुर्बल दास,
स्वर्ण महल की सुखद सेज का
भूल चुके निज भोग-विलास

नवल कुमुदनी कलिका कोमल
कामुक रति का मादक रूप,
अरुण-अरुण पगतल पर झुकते
भव-भूषण भूतल बहु भूप!

सर्वेश्वर-सर्वज्ञ प्रतिष्ठित
प्रिय भागिनी यदुनदन कृष्णा,
द्रुष्टधुम्न रणवीर अनुज था
अर्जुन की अनुरागी तृष्णा।

क्रूर कालवश करुण कामिनी
सैरन्ध्री नामक बन दासी,
सहमी-सहमी-सी आशंकित
राहु-केतु ग्रह ग्रसित विभा-सी।

दारुण दुःख सहे शूरों ने
वे पल-पल करते विषपान,
अंत अवधि अज्ञातवास की
मुक्त हुए संकट से प्रान।

भीमसेन ने कीचक वध कर
हरा द्रौपदी का संताप,
भीष्म-द्रोण-कृप कर्ण समर में
अर्जुन से हारे चुपचाप।

भीम भुजाएँ भड़क उठी थीं
अर्जुन उर में नव उल्लास,
ज्येष्ठ युधिष्ठिर अंतरमन में
नवजीवन की जागी आस।

धर्मपुत्र सब बंधु-बांधव
दास, हस्तिनापुर सम्राट,
सत्य जान अति व्यथित हो गए
बरबस! वो महाराज विराट।

महावीर भुजबल के बल से
रण में हारा त्रिगर्त नरेश,
अनायास भ्रम दूर हो गया
संशय रहा न मन में शेष!

अभिमन्यु से निज पुत्री का
महाराजा ने किया विवाह,
अर्जुन-सुत सम्बंध जोड़कर
प्रमुदित नृप विराट की चाह!

इंद्रप्रस्थ को लौट युधिष्ठिर
भूल विगत का कटु संताप,
नृप से कुल पोषण को माँगे
पंच ग्राम केवल चुपचाप।

क्षुद्र सूचिका, सूक्ष्म अनी भर
भूमि न दूँगा बिन संग्राम,
अंधपुत्र हुँकार उठा सुन
दुर्योधन दुर्बुद्धि स्व-नाम।

यदुनंदन से विनत भाव से
धर्मराज ने करी कामना,
बंधु! जीविका हेतु यत्न था
परमेश्वर से परम प्रार्थना।

कृष्ण हस्तिनापुर जा पहुँचे
अंधे नृप को किया प्रणाम,
ज्ञात उन्हे भारत भविष्य था
स्वयं जानते थे परिणाम।

सोच-सोच भारत भविष्य को
मुखर हुए माधव निष्काम,
धृतराष्ट्र को सम्बोधित कर
मधुर वचन बोलें अविराम।

गुरू गिरा गंभीर गूँजती
मुखरित राजनीति का सार,
राजधर्म औ' लोक धर्म का
सूक्ष्म विवेचनमय विस्तार।

कुटिल आचरण अशुभ अधर्मी
अंतरमन को करता क्लांत
भू-पति उर विद्वेष भावना
चित्त भूप का करे अशांत

बंधु-बांधव वैर भाव से
यश वैभव कुल होता नाश,
द्वंद्व परस्पर निमिष मात्र में
भव्य दिव्यता करे विनाश।

नीति वचन सर्वज्ञ कृष्ण के
मूक-बधिर बैठे महाराज,
मंत्रीगण पाषाण मूर्ति से
सुनते सर्वेश्वर आवाज!

सत्य-धर्म के पालन कर्ता
पाण्डव अनुपम शूर सपूत,
पाण्डवजन को अर्धराज्य दे
राजन! वह होंगे अभिभूत।

संयम धर्म नीति-अनुशीलन
जाने दुर्योधन-दु:शासन
प्रगति पंथ पर आरूढ़ होंगे
स्वर्गलोक-सा होगा शासन!

पाण्डुपुत्र हो मर्यादा मे
मेरा पावन है कर्तव्य,
अनुशासन के दृढ़ बंधन मे
आप पुत्र निज करें सुसभ्य!

सत्य वचन सुन यदुनंदन के
आनंदित हो सभ्य समाज,
किंतु, कुटिल शकुनी आशंकित
विह्वल-विचलित थे महाराज।

दुर्योधन दुःशासन क्रोधित
भड़क उठे कुरुवंशज लाल,
चंदन की शीतल सुगंध से
तृप्त कहाँ होते विष-व्याल?

कलुष कालिमा क्रूर की
घिरती आती थी विकराल,
अंधपुत्र उन्मत्त शीश पर
बैठ गया था निष्ठुर काल।

यदुकुल भूषण भामापति ने
सुभग संधि हित किए प्रयास,
दुर्योधन दुर्जन दुःशासन
विफल चतुर सद्बुद्धि विलास।

अंधा अंधबुद्धि महाराजा
निरख न पाया महाविनाश,
सूर्य साँझ को लगा सिसकने
रोए अंतरिक्ष आकाश।

भीष्म मुखर हो सके न क्यों कर?
रण के लगे सुलगने ज्वाल,
भारत भू पर शेष बचेंगे
नर नव यौवन तन कंकाल।

अमर अकंपित मृत्युपाश मे
देवराज सम उलझे वीर,
अहंकार मद में विनाश को
दुर्योधन उन्मत्त अधीर!

भारत भू की सकल सपदा
ध्वंस करेंगे जलते ज्वाल,
महासमर में रक्त पिएगा
योद्धाओं का निष्ठुर काल!

गौरव-वैभव चिरतृष्णा ने
हाय! सर्वदा किया विनाश,
रक्त-पिपासा क्रूर नृपों की
तृप्त न होती शोणित प्यास।

आदिकाल से अंतकाल तक
भोगे भव-भूतल संत्रास,
सकल सृष्टि का उष्ण रक्त से
अनुरजित सारा इतिहास!

शस्य-श्यामला स्वर्ग सरीखी
धरा हुई रण मे शमशान,
मानव ने शुचि मानवता की
अधरो से लूटी मुस्कान।

प्रांजल-पावन प्राकृत उर मे
कपट असुरता करे निवास,
असुरो की अतृप्त तृष्णाएँ
बुझती कभी न शोणित प्यास।

दानव हिंसक जाग उठा था
भक्ष्य करेगा मानव माँस,
नरमुंडों की माल पहिनकर
समर भूमि में करे निवास।

माधव मथुरा लौट चले थे
अंतर आकुल अति असहाय,
विधि-विधान को टाल न पाए
निष्फल सद्प्रयास निरुपाय।

बुद्धि विनाश विरुद्ध विधाता
महाकाल देता संकेत,
कुरुवंशज वो मोह कालवश
हो न सके थे गूढ़ सचेत।

माधव धर्मपुत्र से कहते
युद्ध-नीति पर करो विचार,
बिना युद्ध के कर न सकोगे
अपनी सत्ता पर अधिकार।

याचक कभी न बनता शासक
विजय वरण सौपे अधिकार,
राज भोगने के हेतु युधिष्ठर
करो कौरवों का संहार!

भीष्म-द्रोण-कृप-कर्ण धर्नुधर
अर्जुन भीम करे संग्राम
तुमको विजय वरण सीमा तक
रण लड़ना होगा अविराम।

सुबलि शकुनि छलबल से बढ़कर
योद्धा वीर नकुल-सहदेव,
सत्य धर्म को सदा विजय दें
आराधक देवो के देव।

धृष्टद्युम्न से द्वद्व करेंगे
रण-कौशल मे अद्भुत द्रोण,
गुरु-शिष्य में यश-अपयश की
होगी विजय होड।

दुर्योधन की गदा चतुर्दिक
शूरों का करती संहार,
किंतु! भीम के झेल सकेगा
कभी न भीषण- गदा प्रहार!

दुर्योधन शत् भ्राताओ को
भीम अकेले देंगे मार,
दु:शासन भी कर न सकेगा
विकट वृकोदर का प्रतिकार!

भीष्म-द्रोण-कृप-सा बलशाली
हा! अजेय है योद्धा कर्ण,
अतिरथियो का जिसे देखकर
मुखमंडल हो पीत-विवर्ण!

किंतु! न हो भयभीत भ्रातजन
सत्य सर्वदा साथ युद्ध मे,
क्रूर काल अभिशाप आ गया
दुर्योधन की दुष्ट बुद्धि मे!

द्वितीय सर्ग

रण आतुर द्वय सैन्यछावनी
कौरवदल के शिविर विशाल,
योगेशवर ने सैन्य सुसज्जित
अपने शिविर किए तत्काल!

कुरुक्षेत्र के रण प्रांगण में
नृप शिविरों का फैला जाल,
शोणित के निर्झर फूटेंगे
वसुंधरा फिर होगी लाल!

रणभेरी बज उठी भयंकर
गूँज उठा दिशि-दिशि जयघोष,
भीम द्रुपद दुर्योधन दृग मे
ज्वालाओं-सा जलता रोष!

जगमग-जगमग अस्त्र-शस्त्र द्युति
सूर्य प्रभा-सी प्रखर दामिनी,
कुरुक्षेत्र पर मँडराती थी
रक्तपिपासू काल यामिनी!

भीष्म कौरवों के अधिनायक
अर्जुन के काँपे मन-प्राण,
तेजस्वी तन-मन कुम्हलाया
कर से छूट गिरा धनु-बाण।

कैसे मैं श्रद्धेय पूज्यवर?
भीष्म पिता पर करूँ प्रहार,
यदुनंदन से कहे धनन्जय
मुझे पराजय है स्वीकार।

सोया-जागा मधुर अंक में
पथ पर पग-पग सीखा चलना,
और धरा पर गिर जाने पर
उठने को तर्जनी पकड़ना।

अश्रु पोछते नेह लुटाते
कैसे भूलूँ प्यारे हाथ?
भोजन करता बैठ गोद मे
बचपन बीता जिनके साथ।

भीष्मपिता के सम्मुख माधव
मेरा उठे न रण मे शीश,
इसी शीश पर तो अंकित है
तात श्री के शुभ आशीष।

पूज्यपाद है द्रोण गुरू के
सीखा धनु पर धरना वाण,
दोनो के चरणों में अर्पित
तन-मन हृदय अनश्वर प्राण!

कैसे दोनों पूज्य जनो पर?
आज करूँ मैं तीक्ष्ण प्रहार,
भीष्म-द्रोण से द्वन्द्व युद्ध को
अर्जुन करता था इन्कार!

सर्वेश्वर सत्ता संचालक
कर्ता करता कर्म महान,
अर्जुन क्षत्रिय धर्म तुम्हारा
करो धनुष पर शर-सधान!

मधुराधर से मधुमय फूटा
दिव्य दृष्टि से गीता ज्ञान,
अर्जुन उतरो महासमर में
निमित्त मात्र अपने को मान!

धर्मपुत्र का रण सचालन
कौशलयुत करते रणछोड,
विजय श्री पाने को आतुर
योद्धाओ के उर में होड़!

दस सहस्त्र नित योद्धाओं को
भीष्म पिता भेजे परलोक,
कालजयी के सम्मुख मद्धिम
पाण्डव वीरों का आलोक!

एक अकेला अर्जुन रण मे
गंगासुत के रोके वार,
किंतु मोहवश पूर्ण शक्ति से
कभी न करता तीक्ष्ण प्रहार।

शूर शिखडी दिव्य धनज्जय
रथ मे लडने आए साथ,
अश्वों की वल्गाएँ थामे
केशव के दिग्दर्शित हाथ।

निरख शिखंडी का मुख मंडल
त्यागे भीष्म पिता धनु-वाण,
अर्जुन के अमोघ वाणों से
मिला भीष्म को रण से त्राण।

सूर्य शौर्य बल गंगासुत ने
अपना स्वय किया अवसान,
प्राण, त्यागते विक्षत देह से
पूज्य पिता का था वरदान।

शोकमग्न थे शर-शैय्या पर
दुष्कर्मों का दंड भोगते,
ऐसी अशुभ प्रतिज्ञा की क्यों?
अतकाल तक रहे सोचते!

कुरुवंशज का झुका न जयध्वज
अब अधिनायक गुरुवर द्रोण,
नियत समर के नियम भग हो
आशंकित होते रणछोण।

दिव्य-दृष्टि अद्भुत रणकौशल
रणविद्या बहु विविध-विधान
परशुराम से अस्त्र-शस्त्र का
अर्जित अद्भुत विधि विज्ञान!

नरतवश का परिपोषण पा
यौवन-सा तन-मन बलवान,
गुरुकुल में कौरव-पाण्डव को
धुनर्वेद का देकर ज्ञान।

नित रणकौशल दुहराने से
प्रखर हो गए अपने प्राण
आज युद्ध में मिला स्वयं को
निज कौशल का पुष्ट प्रमाण।

गुरूवर की थी कीर्ति इद्र-सी
कार्तिकेय-सा प्रबल प्रताप,
वक्ष न बीध सके अर्जुन का
दुर्योधन को . था संताप।

अगराज अधिराज सूर्यसुत
रण मे रत रहता अविराम,
त्रिभुवन जय करने वालो को
दैव न दे इच्छित परिणाम।

विजयश्री वरमाल वरण था
देवकाल गति के आधीन,
अंधपुत्र अति व्यथित व्यग्र हो
दुश्चिता मे अनुक्षण लीन।

शीश झुकाए था दुर्योधन
मुखमडल पर छाया शोक,
आहत हो कह रहा द्रोण से
मेरी हीन दशा अवलोक।

हे! कौरवकुल भाग्यविधाता
कालजयी तेरा आलोक,
गुरूवर प्रबल प्रचड वेग को
दानव देव न सकते रोक।

धनुर्वेद आचार्य हमारे
उपजा अंतर में संदेह,
अर्जुन! प्रियवर, शिष्य आपका
परम पाण्डवों पर स्नेह!

कौरवकुल पर कालरात्रि की
छाया गुरूवर स्वय विलोक,
प्रखर वाण में स्वर्णरश्मियाँ
तिमिर हरें दे-दे आलोक!

विजयश्री बसती चरणों में
कौन भुवन में तुम सम वीर?
किंतु! हमें नित मिले पराजय
अंधपुत्र दृग कहता नीर!

अर्जुन अपराजेय भुवन में
मम भुजबल पुरुषारथ व्यर्थ,
दुर्योधन तुम नहीं जानते
अर्जुन के अस्त्रों का अर्थ!

अस्त्रों-शस्त्रों का सचालन
भव रणकौशल छल-बल ज्ञात,
वाण न वह मेरे तुणीर मे
अर्जुन से जो हो अज्ञात!

मैने मनोयोग से अपने
अर्जुन को दे डाला ज्ञान,
राजन! कहो कहाँ से लाऊँ?
अभिनव आयुध रण विज्ञान!

कर में दृढ गाडीव सुशोभित
हो तुणीर मे अक्षय वाण,
देव-दनुज गधर्व सर्प मिल
हर न सकेंगे पाण्डव-प्राण!

योगेश्वर सर्वज्ञ सारथी
अश्वो की हाथो मे डोर,
विजयपताका देख मृत्यु भी
मुड़े दूसरे पथ की ओर!

चतुर कृष्ण, कौतेय पराक्रम
रणप्रागण में पल-पल साथ,
क्रूर काल यमराज देव भी
कर न सकेंगे उन्हे अनाथ!

विजयकतु पर सदा प्रतिष्ठित
महावीर रहते हनुमान,
पाण्डुसुतो की स्वयं सुरक्षा
करें सारथी बन भगवान!

अर्जुन जैसा कौन धनुर्धर
अर्धरथी बलशाली कर्ण,
नृप विराट के साथ युद्ध में
अर्जुन सम्मुख कर्ण-विकर्ण!

एक अकेले अर्जुन को जय
कर पाए कब मिल जुल वीर,
भीष्म-कर्ण के साथ स्वय मै
हुआ पराजित और अधीर!

शिवशकर का पशुपति-अस्त्र
जग मे है अर्जुन के पास,
छूटा जो गांडीव धनुष से
पल मे होगी सृष्टि विनाश।

कालजयी ये भीष्म पितामह
तुमने देखा था अवसान,
युग-युग मे भूतल पर जनम
ऐसा अनुपम वीर महान।

कृष्ण सुदर्शनचक्र धारते
काटे शूर-वीर के शीश,
प्राण न तन में रख पाएगा
चक्र सुदर्शन से अवनीश।

कौरवकुल का हो न पराभव
मेरे कर में है धनु-वाण,
अर्जुन, मेरे जीवित रहते
ले न सकेंगे तेरे प्राण।

अर्जुन अतिशय दूर व्यस्त हो
अभिनव ऐसा करो उपाय,
सकल पाण्डव पल में होंगे
अर्जुनबिन निर्बल निसहाय।

गूँजे ना गांडीव प्रत्यंच्चा
दूर बहुल हो अति घनश्याम,
ज्येष्ठ पाण्डुसुत वंदी करना
दुर्योधन सुन मेरा काम।

शासक बदी बन जाने पर
जीवनभर हो तेरा दास,
बिना युद्ध के इंद्रप्रस्थ भी
होगा कुरुवंशज के पास।

आस-पास में दिखे न अर्जुन
दूर कहीं रण मे घनश्याम,
आज किसी पाण्डव को निश्चय
मै भेजूँगा सुन सुरधाम

आह्लादित युवराज प्रफुल्लित
सत्य बचन गुरूवर के मान,
कौन भुवन में कर पाएगा?
भग द्रोण का यह अभिमान!

दुर्योधन दु:शासन-उर मे
जय की जागी नूतन आस,
गरल छलकने लगा दृष्टि से
अंतरमन में अति विश्वास।

प्रबल पार्थ को ललकारेंगे
पीछे पग धर त्रिगत नरेश,
सुनियोजित षड़यत्र कुटिलतम
दुर्मद दुर्योधन आदेश।

वीर सुशर्मा ले जाएगा
केंद्र-बिन्दु से उनको दूर,
द्रोण गुरू के बिछे जाल मे
फँस जाऐंगे पाण्डव-शूर।

ओझल दृग से दूर विजय-ध्वज
कौरवदल के प्रमुदित प्राण,
सेनापति ने विधि-विधान से
चक्रव्यूह का कर निर्माण।

चक्रव्यूह की सप्त परिधियाँ
परिधि-परिधि मे विविध अराल,
बिंदु-बिंदु पर घात लगाए
सजग-प्रतीक्षित निर्मम काल।

गुरूवर रण-विज्ञान-विशारद
विस्मयकारी व्युह-विन्यास,
चक्रव्यूह-भेदन का कौशल
अर्जुन मधुसूदन के पास।

प्रबल पार्थ औ' संकट-मोचन
दिखे न पाण्डव-जन को पास,
मूक विवशता निर्निमेष थी
अश्रु भरे लोहित आकाश!

उच्च भाल पर दुश्चिंताएँ
मुखमंडल का तेज मलीन,
धर्मराज की सत्यधर्मिता
आज लग रही निष्प्रभ, हीन।

निर्झर नीर-भरे दृग सम्मुख
खुला काल का मुख विकराल,
विजय-पराजय, यश-अपयश का
नियति नियंता निर्मम काल!

राजहस के पख कटे ज्यो-
विवश चले आतंकित श्वान,
अगम सिंधु में डूब रही ज्यों-
जीवन जीने वाली आस।

सिधु राज की गर्वित गूँजी
गहन गगनभेदी ललकार,
भीम युधिष्ठर यमज प्राण मे
मचा हुआ था हाहाकार।

रोम-रोम में सिहरन भरता
चक्रव्यूह का वह विस्तार
कौन शूर विध्वस करेगा
छुपे-अनछुपे दुर्लभ द्वार।

योगोश्वर बिन भीम-युधिष्ठर
अति अधीर, आकुल, निष्प्राण
नैन खोजते दूर-दूर तक
अनुज पार्थ के पैने वाण।

प्रखर धधकते ज्योर्तिपुज से
अभिमन्यु ने किया प्रवेश,
मुख पर तपता सूर्य ज्वाल-सा
कार्तिकेय-सा प्रभ रणवेश।

मेष मचलते भुजदंडो में
अरिमद हरते बाहु विशाल,
उच्च भाल पर तिलक रक्त का
द्युतिमय करतल लोहित लाल।

क्षमा करें महाराज धृष्टता
मैं अर्जुन-सुत वीर अबोध,
कला निपुणता भेदन-व्युह की
मुझको सत्य कहूँ है बोध।

एक दिवस मध्याहनकाल में
मातुश्री का हृदय उदास,
माँ की चित्त विकलता हरने
पिताश्री आ बैठे पास।

चक्रव्यूह चित्रांकन करके
व्युह-भेदन-विधि लगे बताने,
सुनते-सुनते विधि प्रवेश की
माँ को नींद लगी थी आने।

मातुश्री के सो जाने पर
मौन हो गए मेरे तात,
व्यूह भेदना जान गया मै
भेद लौटने का अज्ञात।

भरतवंश का शोणित तन में
भुजदंडों मे भीषण ज्वाल,
भीष्मपिता का मै प्रपौत्र हूँ
सर्वश्रेष्ठ धर्नुधर का लाल।

मम-मातुल का सघन प्रशिक्षण
योगेश्वर वो चतुर सुजान,
चक्रव्यूह विध्वंस करूँ मै
पूज्य पिता का रक्खूँ मान!

द्रोण-कर्ण-नृप, अश्वत्थामा
दुर्योधन दृग लखें प्रताप,
मेरे भीषण संघातों से
कौरव सेना करे प्रलाप।

नरमुंडों के ढेर लगाऊँ
वैरीदल को करूँ विदेह
निर्भय, निश्चित ज्येष्ठ पाण्डु हो
भुजबल पर न करें सदेह!

तीक्ष्ण शरों के प्रबल प्रभंजन
रोक न पाएँगें देवेश,
अभिमन्यु ने विनत भाव से
राजन! से माँगा आदेश!

शुष्क-शुष्क तृण जले अनल मे
भस्म करूँगा कुरुदल आज,
अरुणोदय के साथ उदय हो
पाण्डुवश का उज्ज्वल राज!

मेरे कुलदीपक-कुलभूषण
सुघड़ सुभद्रा का संसार
कालजयी प्रिय यदुनदन का
प्रिय! सुत तुम पर नेह अपार!

भरतवश के ज्योति दीप हो
पाण्डवजन का दृढ आधार,
उज्ज्वल ज्योति धनन्जय दृग की
कृष्णा करती नेह अपार!

भले पराजय मिले युद्ध में
गिरि प्रस्तर मे करें प्रवास,
मेरी कीर्ति कलंकित होगी।
युग-युग क्लीव कहे इतिहास!

सूर्य समुज्ज्वल शौर्य बदन में
अतुलित भुजबल पर विश्वास,
किंतु! न तुमको भेज सकूँगा
असुर सरीखे अरि के पास!

कौन भुवन मे अजर-अमर है
जीवन स्वाति बिंदु विस्तार,
जग में युग-युग तक आलोकित
सद रहेगी 'कीर्ति अपार।

अनुक्षण-अनुक्षण क्षरण देह का
माटी का क्षण भंगुर गात,
समय सर्वदा करता रहता
नश्वर तन पर पल-पल घात।

कुटिल-कुकर्मी कायर क्लीव
रजकण-कण का करते है मोह,
दृष्टि पटल खुलने से पहले
लिखे विधाता सदा विछोह।

मेरा क्षत्रिय धर्म निरर्थक
यौवन भुजबल को धिक्कार,
वृषभ सरीखे स्कधो पर
व्यर्थ ढो रहा धनु का भार।

भीम भुजाएँ लगी फडकने
आनन पर तपता आक्रोश,
जगे क्रोध से भिची मुष्टिका
पचम स्वर में कहे सरोष।

मेरी वज्रगदा को देखो-
शैल-शिखर-शृंगो को तोड़,
अभिमन्यु की करूँ सुरक्षा
अब भ्राता दुश्चिंता छोड़।

दु:शासन ने द्यूत सभा में
हरा द्रौपदी का सम्मान,
दुष्ट दुराचारी कुपुत्र को
अतिशय भुजबल का अभिमान।

वक्ष विदीर्ण करूँ कपूत का
उष्ण-उष्ण कर शोणित पान,
मेरे अधरो पर खोलेंगी
भ्राता उस क्षण में मुस्कान।

रण प्रांगण में नृत्य करूँगा
क्रूर कलंकित भुजा उखाड़,
पाषाणों सी दृढी भुजाएँ
मम भुजबल का पुष्ट प्रमाण।

द्रुपद-सुता के दग्ध हृदय को
शांत करूँ मैं, ले प्रतिशोध,
रक्त धमनियों मे सुलगा है
दावानल-सा अविरल क्रोध।

दैवलोक से देव लखोगे
अति दुर्लभ भीषण सग्राम,
नरकासुर-से कौरव-गण को
भीम गदा भेजे यमधाम।

बज्रपाणि-सी शक्ति वक्ष मे
चक्रव्यूह देगी वह तोड़,
विस्मित व्यूह विध्वंस विलोके
अधिनायक गुरुवर द्विज द्रोण।

तुमुलनाद की गूँज गगन तक
हृदय बींधती रिपु हुँकार,
धर्मपुत्र को विचलित करती
सिंधुराज की सिंह पुकार।

निरालब हतभाग युधिष्ठर
निर्णय नियति हुआ स्वीकार,
अभिमन्यु के स्कधों पर
व्यूह भेदन का दुर्वह भार!

काल कालिमा कुटिल क्रूरता
धर्मराज का हृदय विदीर्ण,
युधिष्ठर के सुभग भाल पर
आज पराजय थी उत्कीर्ण!

आर्त-भाव से वचन उचारे
अभिमन्यु को दे आशीष,
महासमर मे तुम्हें विजय दें
देवो के अधिदेव गिरीश।

तृतीय सर्ग

पूज्यपाद के शुभाशीष ले
शीश धरी चरणों की धूल,
आयुध करने चला सुसज्जित
किंतु विधाता था प्रतिकूल।

शिविर द्वार पर खड़ी भार्या
शूर सजग-सा शौर्य स्वरूप,
स्वर्ण अलंकृत आभूषण तज
रणचंडी का धारे रूप!

विस्मय क्यों? वह वीर वेष लख
जनम-जनम तक पकड़ूँ हाथ,
समरांगण में समर करूँगी
रण में रहूँ तुम्हारे साथ।

प्राण-प्रियतमा अंकशायिनी
तन-मन प्राणों पर अधिकार,
रणचंडी बन युद्ध करूँगी
वैरी दल का हो संहार।

उच्चवशकी क्षत्राणी मै
पतिव्रत धर्म करूँ निर्वाह,
सत सतीत्व मै प्रियवर स्वामी
रत्नाकार-सी प्रीति अथाह।

द्रोण चक्रव्यूह वृत भेदन को
स्वामी सेनानायक आज,
धन्य हुई मै शौर्य विलोके
कुरुवंशज का कुटिल समाज!

आर्यावृत की पतीवृता हूँ
राष्ट्र हमारा भारतवर्ष,
अजय अमर अस्तित्व हमारा
भरतवंश भव में उत्कर्ष!

भुजपाशों मे बँधी उत्तरा
मधुमय मृदु उर मे उल्लास,
प्राणनाथ दो रण की अनुमति
अनुक्षण रहूँ तुम्हारे पास।

रणकौशल मे पूर्ण प्रशिक्षित
अभिनव अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान,
अरिदल मर्दन मान करूँगी
शिवा-भवानी दे वरदान!

स्वय भवानी बन जाऊँगी
रणचंडी सा ले तिरशूल,
बैरीदल को भस्म करूँगी
प्राण! तुम्हारे साथ समूल।

अभिमन्यु रोमाचित गर्वित
प्राण-प्रियतमा मधुर सुवास,
मुग्ध हृदय का स्पदन हो
मेरे जीवन का विश्वास।

भरतवश सुकुमार नववधू
उत्सुक करने को संग्राम,
पाण्डुपुत्र निश्चय भेजेगे
वैरी को असुरों के धाम।

रणचंडी निर्भीक नारियॉ
आहुति दे तन का बलिदान,
राष्ट्रधर्म अभिनंदन करता
शक्ति-शौर्यता दे सम्मान।

जीवन-ज्योति तुम्हीं जनमो की
जीवन पथ का अमित प्रकाश,
अपने दृढ अटूट बधन का
दृष्टा है अवनी-आकाश।

संग सर्वदा श्वास-श्वास के
शयन कक्ष अथवा रणक्षेत्र,
आँखों को आलोकित करते
प्राण-प्रियतमा तेरे नेत्र।

प्रबल पराक्रम समर भूमि में
परखेगा तेरा संसार,
किंतु! यशस्वी पाण्डुवंश की
कीर्ति कलंकित अपरम्पार

लज्जित हो गाडीव धनुष की
प्रत्यचा पर चढ़ते बाण,
त्रिभुवन में जिसके प्रहार से
काँपे देव-दनुज के प्राण।

भीम तात की गदा वज्र-सी
महावीर-सी प्रबल प्रहार,
कुरुक्षेत्र मे द्वंद्व तुम्हारा
उसको दे अपकीर्ति अपार।

मातुल चक्र सुदर्शन धारी
घनी छाँव-से शुभ-आशीष,
अवनत योगेश्वर के सम्मुख
महाबली त्रिभुवन अवनीश।

पाण्डुपौत्र कुलवधू समर मे
व्यंग करे कौरव परिवार,
अर्जुन-भीम युधिष्टर भुजबल
कहाँ खो गया आज अपार?

श्रेष्ठ नकुल-सहदेव सात्यकी
पाण्डुवाहिनी में बहु शूर,
रणकौशल के सम्मुख जिनके
कौरवदल का कौशल चूर!

अरुण दृगो को देख उत्तरे-
क्या पुरुषारथ पर संदेह,
आज सहस्त्रों रणवीरो को
भेजूँगा मैं यम के गेह!

राष्ट्र धर्म पर आहुति देते
प्राणो का करते बलिदान,
स्वर्गलोक मे अभिनंदन हो
या निज विजय वरण मुस्कान।

कर्ण-द्रोण-कृप दुर्योधन का
वक्ष विदीर्ण करेंगे बाण,
पिताश्री सुन प्रमुदित होगे
मेरे बल का मिले प्रमाण।

पिताश्री के पूज्यपाद को
विजय श्री का दूँ उपहार,
विजय वरण कर तुम्हें प्रियतमा
पहिनाऊँगा फिर मैं हार!

विजय वरण कर प्राण-प्रियतमा
पहनाऊँगा फिर जयमाल,
पिताश्री का शौर्य रक्त मे
सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर का लाल!

विजय तिलककर स्वीकृति दे दो
सौंपो हाथों में धनु-बाण,
मैं गौरव हूँ चन्द्रवंश का
अर्पित कुल को मेरे प्राण!

दीप द्वार के प्रज्ज्वलित रखना
जलते रहें दृगों में ज्वाल,
कभी न झुकने दूँगा जयध्वज
पिताश्री का उन्नत भाल!

विजयश्री ले मैं लौटूँगा
वचनों पर प्रिय कर विश्वास,
शुभ्र चन्द्रिका मधुमय होगी
हम-तुम दोनों होंगे पास!

तिलक लगाया चीर अँगूठा
अभिमन्यु का चूमा शीश,
और चरणरज भरी मॉग मे
पाया स्वामी शुभ आशीष!

अश्रु भरे नयनों से कहती
विजयश्री दे तुम्हें गिरीश,
नतमस्तक हो वैरी दल के
सारे भूमंडल अवनीश।

कहाँ कामना पूरित होती
किसकी फलीभूत हो आस?
अनगिन वार मरा अवनी पर
युग-युग में भावुक विश्वास।

द्रुतगामी नव रक्त वर्ण के
अश्व जुते रथ में बलवान,
वीर सुभद्रानंदन करता
स्वर्ण जड़ित निज रथ गतिमान!

वीर भार्या पंथ बिलोके
धुँधला-धुँधला-सा आकाश,
अभिमन्यु के द्युतिमय रथ का
ओझल दृग से हुआ प्रकाश।

चतुर्थ सर्ग

लख चक्रव्यूह का सिंहद्वार
अभिमन्यु हुआ न विचलित था,
अधिनायक बन नृप सिंधुराज
अंतरमन में अति प्रमुदित था।

व्यूह की विकराल परिधियों मे
दुर्योधन दुर्जन छल-बल था,
कौरव के गर्जन-तर्जन मे
आचार्य द्रोण रणकौशल था।

अभिमन्यु अर्जुन का सपूत
नयनो मे ज्वाला जलती थी,
जयदरथ दुष्ट दुर्जन उर मे
कटु-कुटिल कामना पलती थी।

सिंहों का साहस अंतर में
नवयौवन से भुजबल अकूत,
प्रतिबिंब भीष्म के यौवन का
वो। पार्थ सुभद्रा का सपूत।

अस्त्रों-शस्त्रों की द्युति दमके
हर दिशा ज्योतिर्मय होती थी,
नैनों मे निज कुल गौरव की
नवदीप्ति प्रज्ज्वलित होती थी।

अवयव अवयव में शोणित की
अनुरंजित छटा निराली थी,
आलोकित अरुणिम आभा से
अधरों पर लोहित लाली थी।

नव रंग रूप अर्जुन जैसा
माधव का सघन प्रशिक्षण था,
रण अस्त्र-शस्त्र संचालन का
अनुपम अति अद्भुत शिक्षण था।

नृप सिंधुराज का दर्प दंभ
अति व्यंग भरी वाणी बोला,
अपने अतुलित अनुपम बल से
अभिमन्यु का साहस तोला।

अप्सरा सरीखी परिणीता
अलकें श्यामल जा सुलझाओ,
मधुराधर मधुरिम अमिय पियो
यौवन मत रण में उलझाओ।

अतिरथी-रथी छुप गए कहाँ?
तुमको भेजा समरांगण में,
मैं आज अकेले, पाण्डव सब
निश्चय ही मरूँगा रण में।

ओ! नन्हें दूध मुँहे बालक
व्यूह भेदन करने आए हो,
या महा भयकर ज्वाला मे
आहुति दे, मरने आए हो।

तुम पाण्डुवश की रक्षा क्या?
कोमल कर से कर पाओगे,
तुम क्षुद्र शलभ रण ज्वाला मे
जल-जल निज प्राण गँवाओगे।

लौटो! वापस भोले शैशव
माँ का मृदु स्तन पान करो,
नव किसलय से कोमल करतल
मत् इनको लहू लुहान करो।

यदुनदन अर्जुन, भीम बली
क्यो छुपे हुए है आँचल में,
मैं आज अकेले भेजूँगा,
यमलोक सभी को दो पल में।

वो महारथी विकराल भीम
शत गज-बल भरा भुजाओं में,
भयभीत भी म जा छुपा कहाँ?
पर्वत की गहन गुफाओ में।

यह महाकाल-सा चक्रव्यूह
बैठी छुप मृत्यु अरालों में,
यम-देव-दनुज तक उलझेंगे
तिर्यक परिवृत सजालो में।

सुन अहंकार मद भरे वचन
दृग में भीषण जल ज्वाल उठे,
कौंधती दामिनी बाहों में
फुफकार हृदय मे व्याल उठे!

क्रोधित हो पार्थ सुनंदन ने
उस सिंधुराज को ललकारा,
नवयौवन ने दंभी नृप के
भुजबल को बल से धिक्कारा!

रे! क्लीव जयदरथ भूल गया
तू हाय-हाय चिल्लाता था,
ओ! भीम-युधिष्ठर दया करो
कंपित स्वर मे अकुलाता था।

तन जंघा मध्य फंसा तेरा
भूला तू मुष्टि प्रहारों को,
निज प्राण-दान पाने वाली
याचक-सी करुण पुकारो को!

रे! कामी-कायर हाय-हाय
भिक्षुक-सा तू चिल्लाता था,
मुझको तुम प्राण दान दे दो
रह-रह के अश्रु बहाता था!

करतल से केश उखाड़े थे
तू! केश रहित था सिधुराज,
अवशेष आयु थी अवनी पर
जी रहा कृपा से क्लीव आज!

तन-मन वह तेरे अंग-अंग
उस दिन दाऊ ने तोड़ दिए,
पर ज्येष्ठ तात की आज्ञा से
स्पदन गतिमय छोड़ दिए!

दे ज्येष्ठ पाण्डु ने अभयदान
तेरे कुल पर उपकार किया,
जीवन का संकट मोचक यत्न
यम कर से तुझे उबार दिया!

वो दीन दशा अपयश कलंक
सारे जग ने पहिचाना है,
अब काल तुम्हें लाया सम्मुख
भव मुक्ति मुझी से पाना है।

ले। मेरा प्रथम प्रहार झेल
वाचाल, मूढ़, दुर्जन कामी,
तू दीप अंकिचन माटी का
मैं झंझावातों का स्वामी!

झंझावातों के सम्मुख क्या?
दीपक नन्हा जल पाता है,
ओ। धूर्त अधर्मी द्वार छोड़
अभिमन्यु बढ़ता आता है!

निर्भीक केसरी का शावक
कब श्वानों से भय करता है?
बस। एक सिंह शावक सम्मुख
श्वानों का झुंड बिखरता है।

अर्जुन सुत ने कहते-कहते
शत अग्निपुंज शायक छोड़े,
रणवीरों के हिल उठे हृदय
थराथरा उठे रथ के घोड़े!

वो सिंधुराज का उन्नत ध्वज
पहले प्रहार से टूट गया,
अवलंबित गज-तुरंग बल का
सागर-सा धीरज छूट गया।

सौवीर सूर्य मद भग हुआ
अविरल शायक संघातो से,
दिशि-दिशि से हाहाकार मचा
भीषण शायक आघातो से।

धनु भंग कवच था छिन्न-भिन्न
रथ चक्र विखंडित बिखर गए,
जयदरथ भूमि पर गिरा देख
कुरुवंशज योद्धा सिहर गए।

व्यूह भेद सुभद्रानंदन ने
शिवशंकर का जयघोष किया!
निज शीश उठा, हुँकार भरी
उन्नत स्वर से उद्घोष किया।

वरदान महामृत्यजय का
नृप अक्षय अवयव कवच बना,
कौरव के दल-बल करतल से
हारेगी सृष्टि सकल रचना।

वो अधम-अधीर न विचलित था
शत् भीम गदा के घात सहे,
सहदेव-नकुल तलवारों के
भीषणतम हँस आघात सहे!

शर शत्-शत् भस्म किए पल में
अपने अमोघ प्रभ बाणों से,
हो गए मूर्छित पाण्डुपुत्र
तन जिनके थे पाषाणों से।

मृत्युंजय को जय कौन करे,
देवेंद्र, देवगण रोते थे,
दृढ़! सिंधुराज के क्रोधित दृग
विजयी भव स्वप्न सजोते थे।

त्रिपुरारी के विजयी वर से
पाण्डव सेना टकराती थी,
तेजस्वी ज्वाला में जल-जल
शलभों-सी वह जल जाती थी।

रणवीर सुभद्रासुत जूझे
उन्मत्त अकेला अरिदल से,
घिर जाय केसरी शावक ज्यों
बहु गजराजों के जंगल में।

अति अद्‌भुत अस्त्र-शस्त्र लाघव
सम्मोहित द्रोणाचार्य हुए,
शर वक्ष विस्तृत बींध गया
विह्‌वल आहत आचार्य हुए।

अपलक निहारते विकल द्रोण
द्रुत अस्त्र-शस्त्र संचालन को,
गुरुवर पल भर को भूल गए
अधिनायक अर्थ सुपावन को।

भयभीत सारथी के कर में
अभिमन्यु का आ बाण लगा,
पीड़ा से पीड़ित हाथों से
अश्वों की छूट गई वल्गा।

अब! अनायास आहत गुरुवर
श्रम से उच्छ्‌वास लगे लेने,
पर शूर सुभद्रानन्दन को
वह शुभ आशीष लगे देने।

सुत शूर धनंजय-सा धनुधर
बाणों में प्रवर प्रखरता है,
हे! शूरसपूत विजय वर दूँ
मेरा अंतरमन करता है।

सम्मोहित माया की ममता
पल भर में स्वयं विलीन हुई,
सेनानायक की भाव-भूमि
दुर्योधन के आधीन हुई।

आचार्य द्रोण हो संतापित
वो अचल मूर्ति-से रहे खडे,
दो-चार क्षणों में कर डाले
संहार शूर ने शूर बडे।

अश्वत्थामा-कृप-कर्ण वली
अभिमन्यु के बल से हारे,
दुर्योधन के सैनिक सहस्त्र
शत-शत शायक से सहारे।

चतुरंग सैन्य बल-संबल का
कौरवदल उदधि उमड़ आया,
पर शूर सुभद्रानंदन से
दु.शासन स्वयं न लड़ पाया!

दु:शासन का सुन कंपित स्वर
नृप शल्य बढ़े रथ के सम्मुख,
शत पैने प्रबल प्रहारों से
लथपथ शोणित से उनका मुख!

रणवीर धीर ध्वज ध्वंस हुआ
आहत अश्वो का अमिट शोर,
घायल कुंजर की चिंघाड़े
गूँजें चहुँ दिशि में गहन घोर!

छल द्यूत सभा के मडप मे
शुचि सीता-सा सतित्व हरने,
पापाचारी करला कृतित्व
मम, माँ को निर्वसना करने।

कुजर घायल चिंघाड रहे
तन बिंधे दहकते तीरों से,
अभिमन्यु वेग न रुकता था
कौरव दल के बलवीरों से।

प्रज्ज्वलित प्रभाकर-सी दमकें
तीरों की ज्वाल भरी नोके,
वह अंग-अंग में धँस जाती
उन्मादित अनगिन वीरो के।

विष बुझे वाण वर्षा बरसे
दु:शासन का रथ तोड़ दिया,
बस् एक वाण से घायल कर
वैरी को जीवित छोड़ दिया।

आखेट भीम का दु:शासन
वह इसकी भुजा उखाडेगे,
दुर्वक्ष दुष्ट दुष्कर्मी का
नव पल्लव जैसा फाडेगे।

सौगंध भीम ने तत्क्षण ली
मैं भुजा उखाड़ूँगा जड से,
यह विस्तृत वक्ष विदीर्ण करूँ
तिल भर न हटूँ अपने प्राण से।

पंचाली माँ अलके धोए
नवशोणित हो दु:शासन का,
मै रक्त उष्ण का पान करूँ
प्रण पूर्ण करूँ निश्चय मन का।

ये सोच धनन्जय के सुत ने
दु:शासन के ना प्राण-हरे,
निज शर से बींध हृदय उसका
चहुँ दिशि में अनगिन वाण भरे।

नर अंगो से पट गई धरा
विद्युत स्फुलिंग बरस रहे,
रणवीर बाँकुरे रण हारे
अभिमन्यु शर आघात सहे।

कृतवर्मा शकुनी भूरिश्रवा
नृप शल्य समेत पराजित थे,
प्रभ अस्त्र-शस्त्र अभिमन्यु के
समरांगण में अपराजित थे।

लख दीन दशा अतिरथियों की
दुर्योधन व्यथित हताश हुआ,
बाणों के प्रबल प्रभंजन से
आच्छादित भू-आकाश हुआ।

आहत आशंकित व्यालों का
ज्यों निर्भय गरुण विनाश करे,
भयभीत सशंकित शूरों का
अर्जुन सुत क्षण में नाश करे।

अभिमन्यु को सब महारथी
रण में मिल-जुल संहारेंगे,
धनु बाण करों के दृढ़ इसके
हम युद्ध आज का हारेंगे।

अभिमन्यु पर वह महारथी
निज अस्त्र-शस्त्र से टूट पड़े,
मर्यादा छोड़ी कौरव ने
बहु विपुल विधर्मी साथ लड़े।

अरि अस्त्र अंग पर बरस रहे
अबर से बन अगारो से,
अंगों से लोहू बरस रहा
रिपुदल शत शक्ति प्रहारो से।

पर पल भर में अभिमन्यु ने
कौरव दल वक्ष प्रबल बीधा,
दुर्योधन सुत के प्राण गए
उर मे जा धँसा वाण सीधा।

निष्प्राण देख निज सुत का तन
दुर्योधन अचल अधीर हुआ,
नैनों से निर्झर फूट पडे
विह्वल मन शिथिल शरीर हुआ।

अभिमन्यु पर वह सप्तरथी
वो बाज, गिद्ध-से टूट पड़े,
मर्यादा की सीमा लाँघी
बालक से मिलजुल साथ लड़े।

आचार्य द्रोण के सम्मुख ही
दुर्योधन क्रोधित हो चीखा,
निज पुत्र मृत्यु विह्वलता मे
दृग को दुष्कर्म नहीं दीखा

हे! कर्ण धनुष, ध्वज भंग करो
रथ हीन करो इसको क्षण मे,
अश्वत्थामा तू काट शीश
यह प्राण न हो समरागण में।

आचार्य द्रोण का शूर पुत्र
आचरण युद्ध का भूल गया,
रणनीति नियम आचार त्याग
वह धर्मयुद्ध प्रतिकूल गया!

आचार्य द्रोण, अश्वत्थामा
राधेय, धनुर्धर कृपाचार्य
दुर्योधन दुर्जन दु:शासन
यह नरपिशाच कौरव अनार्य!

नृप सिंधुराज भी साथ-साथ
अभिमन्यु वीर अकेला था,
इतिहास न इनको क्षमा करे
हर वार सभी का झेला था!

आचार्य द्रोण, दुर्योधन का
छलबल कटु कुटिल कलंकित है,
अभिमन्यु का बहता शोणित
गौरव-वैभव से अंकित है!

वह दानवीर भुजबल अतुलित
धनु तोड़, आज अति लज्जित है,
शुभ भाल सुभद्रानंदन का
यश से सर्वदा सुसज्जित है!

तज सुभग सुपावन शुचि सुकृत्य
दुष्कृत्यो के आधीन हुए,
तुम वेद-उपनिषद के ज्ञाता
क्यो सत्कर्मो से हीन हुए!

वो वीर विधर्मी भू-कलंक
रणकौशल के सब ज्ञाता थे,
कहने भर को सब महारथी
कौरव कुल भाग्य विधाता थे।

शुचि सत्य धर्म की मर्यादा
विह्वल हृत् फूट-फूट रोई,
यशस्वी भरतवंश वैभव
गौरव की गुरु गरिमा धोई।

वो! पार्थपुत्र था निरालंब
कब तक शूरों से टकराता,
हर अंग-अंग घायल हारा
साहस से था लड़ता जाता।

धनु-वाण तुणीर कटे क्षण में
वहुँ खड-खंड थी गदा नई,
लडते-लड़ते असि रुधिर सनी
राधेय वाण से टूट गई!

अभिमन्यु अस्त्र-शस्त्र रण मे
सब एक एक कर थे टूटे,
नवयौवन तन के व्रण-व्रण से
शत-शत शोणित झरने फूटे!

रथचक्र उठाया बाँहों मे
अंतिम करतल का बना अस्त्र,
पर एक बाण ने पल भर मे
टुकड़े-टुकडे कर दिया शस्त्र!

ऐसा अधर्म-अन्याय देख-
रोया निष्ठुर वो महाकाल,
अंबर से अश्रु बिंदु टपके
कुरु बने विषैले क्रूर व्याल!

था मृत्यु सामने मुख खोले
वहुँ देवदूत थे पास खड़े,
योगेश्वर अनुजा का सपूत
निर्भय निश्छल रणवीर लड़े!

दुःशासन सुत की अनायास,
उस उच्च शीश पर गदा पड़ी,
उड़ गए पखेरू प्राणों के
ले गई काल की क्रूर घडी।

निज स्वर्गारोहण से पहले
अस्फुट! स्वर श्वासों ने पूछा-
मेरे मिलजुल क्यो प्राण हरे?
बिखरे विश्वासो ने पूछा-

हे परशुराम के शिष्य रथी
चुक गया अतुल भुजबल सारा,
मेरे शत्रु सायक सम्मुख क्यों?
खो गया तेज श्री हत् हारा।

तू दानवीर सत्कर्म त्याग
आया अधर्म के आश्रय में,
हाँ! धर्मवीर निश्छल रहता
अनुक्षण निज विजय-पराजय मे।

मैं वीर सुभद्रानंदन, सुन-
अपने भुजबल से लडता था,
तू कायर क्लीव कुकर्मी-सा
मेरे वाणों से डरता था।

कुल गुरुश्रेष्ठ द्विज कृपाचार्य
तुम पाप कर्म के भागी हो,
अभिमन्यु कौशल से हारे
निश्चय! गुरुवर हतभागी हो!

आचार्य द्रोण से अर्जुन सुत
विह्वल होकर ये कहता है-
रणकौशल मे अनुपम अजेय
ब्राह्मण अनीति क्यों सहता है!

मम मातुल प्रभ करतब कौशल
गुरुवर तुमसे टकराया था,
बल वृद्ध भुजाओं का सूखा
दृग में तम घन घिर आया था।

आचार्य प्रवर कुल गुरु दीपक
तुम अधम चाकरी करते हो,
निश-दिन बिलखा भूखा शैशव
क्यों दंभ विजय का भरते हो।

तुम धर्मयुद्ध की परिभाषा
याचक हो, जानोगे कैसे?
दुर्योधन का कुसंग पाकर
लगते हो दुःशासन जैसे!

दैदीप्य दिवाकर अस्त हुआ
आँखों में अविरल आँसू थे,
मुख छुपा लिया धुँधलाहट मे
रजनी के पलक रुआँसू थे।

शुभ सत्य धर्म की निष्ठा भी
अभिमन्यु शव लख कर रोई,
अर्जुन सपूत की आँख अरुण,
समरांगण में जिस क्षण सोई

षष्टम्-सर्ग

सत्य! ने निरखा धर्म विनाश
समर मे नीति-नियम का नाश,
अश्रुपूरित आहत आलोक
साँझ को किसके भू-आकाश!

बुझा था पाण्डुवश का दीप
कलंकित कौरव-कीर्ति प्रदीप,
देह अभिमन्यु की निष्प्राण
पाण्डव वीर न दिखे समीप!

द्रोण रणकौशल, शुभ्र, मलीन
पराजित कुलगुरु का अभिमान,
व्यर्थ द्विज धनुर्वेद आचार्य,
घटाया परशुराम सम्मान!

एक अभिमन्यु, शूर अनेक
वीरगति मिली, विजय का श्रेय,
वीरता करती उसे प्रणाम
युद्ध में यशोगान था गेय!

कौरवों के दुष्कर्म, अनीति
धर्म से कैसे होती प्रीति?
अधर्मी सूर्य पुत्र राधेय
द्रोण दुष्कृत्या थी रणनीति।

कहाँ सौवीर नरेश सुपात्र
व्यर्थ भुजबल का गौरव गान,
सुरक्षा कवच कठोर अभेद्य
महामृत्युंजय, जय वरदान!

कर्ण का कलुषित कर्म कलंक
कल कहे क्लीव काल इतिहास,
पुण्य वह दान कर्म पाखण्ड
अभागा दुर्योधन का दास।

कृष्ण सर्वेश्वर थे सर्वज्ञ
धनन्जय रथ ले पहुँचे दूर,
नियति का निश्चित नियम विधान
काल गति कितनी निर्मम क्रूर।

दिशाएँ कंपित, शशि भयभीत
सितारे सिसके, चुप आकाश,
सहमती वसुंधरा अविराम
शिविर में धुंधला दिखा प्रकाश

सुनो ज्यो विजय शंख का नाद
कौरवो का हर्षित उन्माद,
हुआ अभिमन्यु महाप्रयाण
मृत्यु का छाया विशद विषाद।

मच गया रोदन हाहाकार
द्रोपदी करती विकल विलाप,
सुभद्रा सह न सकी उर शोक
जलाता तन-मन सुत-संताप।

उत्तरा की अंबर तक चीख
शीश धुन करती करुणा प्रलाप,
शोक सागर में डूबे प्राण
मूक पाषाणों-सी चुपचाप।

युधिष्ठर अति अधीर गंभीर
भीम बलशाली गिरे अचेत,
नीर भर नकुल अनुज सहदेव
महारथी रोए सैन्य समेत।

काँपते धृष्टद्युम्न के प्राण
कहूंगा कैसे क्रूर यथार्थ?
देह निष्प्राण पुत्र की आज
हाय! देखोंगे कैसे पार्थ?

बुझाया पाण्डव वंश प्रदीप
कलंकित कुरु वंशज कुलकीर्ति,
द्रोण-दुर्योधन दुर्लभ पाप
न युग-युग मिटे अधम अपकीर्ति!

नृत्य करता वो सिंधु नरेश
द्रोण थे विह्वल बहुत अधीर,
हृदय में हाहाकार असीम
सह रहे अपराधों की पीर!

कर्ण लज्जित सहता संताप
हुआ क्यों पुण्य करों से पाप?
वीरता भुजदंडों की व्यर्थ
करूँ मैं कैसे पश्चात्ताप?

शकुनि, दुःशासन मद में लीन
असुरता-सी मुख पर मुस्कान,
गले में विजय वरण जयमाल
दे गया शिवशंकर वरदान!

साँझ को योद्धा त्रिगत नरेश
पार्थ ने पहुँचाये परलोक,
विजय का जगा न उर आह्लाद
उमड़ता रह-रह मन में शोक!

विजय रथ बढ़ा शिविर की ओर
अपशकुन पथ में हुए अनेक,
निशा में सुन उलूक चित्कार
खो गए अर्जुन बुद्धि विवेक।

शिविर के आए अर्जुन पास
दिखा सहमा-सहमा परिवेश,
तिमिर में नृत्य करे कंकाल
कक्ष में ज्योति मलिन अवशेष।

हृदय आशक्ति अगम आधीर
मचा मन में भीषण कोहराम,
अधर पर आज गहनतम मौन
राह में धारे थे घनश्याम।

शिविर में झुके-अध झुके केतु
पराजय का देते संकेत,
युधिष्ठिर पाषाणों से मूक
धरा पर बैठे अनुज समेत!

सामने धरी पार्थिव देह
धरा पर बिखरा था संताप,
कृष्ण को कृष्णा सम्मुख देख
लिपट कर करने लगी विलाप।

छलकने लगे पार्थ के नेत्र
हाय! यह कैसे हुआ अनर्थ?
हृदय विस्तृत हो उठा विदीर्ण
जान तम सन्नाटे का अर्थ।

हिचकियाँ सके न अर्जुन रोक
पुत्र मर्मांतक दारुण शोक,
आज योगश्वर स्वयं अधीर
कहे क्या? अर्जुन दशा विलोक।

झेलते क्रूर काल आघात
कह रहे विश्व धनुर्धर श्रेष्ठ,
युधिष्ठर निर्लज निर्बल दीन
भ्रात कहलाने भर को ज्येष्ठ।

भुलाया रणकौशल विज्ञान
गवाँया शिक्षण युद्ध विधान,
अकेले चक्रव्यूह में भेज
तुम्हीं ने हरे पुत्र के प्रान।

कहाँ था विकट वृकोदर भीम?
भुजाओं के बल को धिक्कार,
तुम्हारी बज्रगदा किस अर्थ?
जयदरथ पर न हुआ प्रहार।

अरे! यह यमज नकुल-सहदेव
मृत्यु के भय से अति भयभीत,
शिथिल दोनों के होंगे अंग
हो गई हाय! क्लीव की जीत!

हमारे अस्त्र-शस्त्र सब व्यर्थ
शौर्य शिक्षण मिथ्या अभिमान,
वीरता वन में हुई विलीन
हमारा सूर्य हुआ अवसान!

निरर्थक निष्फल पशुपति अस्त्र
ढो रहे व्यर्थ गदा का भार,
हृदय में शौर्य न अपने शेष
हमारे जीवन को धिक्कार!

प्रहर भर करते रहे विलाप
शांत न होता उर संताप,
मीत! योगेश्वर तोड़ो मौन
दिया किस दुर्वासा न श्राप!

धूसरित कर दूँ सारी सृष्टि
जला डालूँ सारा संसार,
मही मैं कर दूँ मनुज विहीन
मिलेगा कहाँ पुत्र का प्यार!

सुभद्रा को कैसे दूँ लाल?
कहो! सर्वेश्वर सुफल उपाय,
शाल कैसे कर लूँ सताप
आज मैं क्यों निर्बल असहाय।

वृषभ व्यर्थ बृहत् गाडीव
गूँजती प्रत्यचा टकार,
थरथराते ध्वनि सुन तीनों लोक
मारता शेषनाग फुंफकार।

हाय! यह अक्षय अमिट तुणीक
कभी कम हुए न अद्भुत वाण,
धनुर्विद्या निज भुजबल शक्ति
दे रही क्यो न विजय प्रमाण?

हमारे कुल दीपक को कृष्ण
बुझाया दुर्योधन ने आज,
हमारा तप-बल सारा क्षीण
करेंगे क्या हम लेकर राज?

धनुर्धर सर्वश्रेष्ठ बलवीर
तृप्त शिव को करने का श्रेय,
दे दिया पशुपति मारक अस्त्र
सृष्टि में मैं हूँ आज अजेय

तुम्हारे पास सुदर्शन चक्र
विश्व को कर देना संहार,
पृथ्वी मुझको कर उदरस्थ
देह ने भोग लिया संसार।

मुझी को डँसते मेरे पाप
दे दिया देवों ने अभिशाप,
शोक में डूबे थे कौंतेय
प्रहर भर करते रहे प्रलाप।

उत्तरा का सुन विकल विलाप
धनन्जय में जागा आक्रोश,
विधाता कैसा क्रूर विधान?
पुत्र वधु बिलख रही निर्दोष।

सजाऊँ कैसे सूनी माँग?
मिटाया कर्ता ने सिंदूर,
अकेले सुत थे अति-असहाय
इसलिए चले गए तुम दूर।

पुकारा क्यों ना मुझे सपूत?
भस्म कर देता कुरुदल आज,
पुत्र न पहुँची मेरे पास
तुम्हारे प्राणों की आवाज!

उत्तरा करती करुणित हाय!
नाथ, मैं तुम बिन बनी अनाथ,
भुवन में गए अकेला छोड
जन्म-जन्मांत्तर का है साथ।

कुमुदनी खिले न बिन मार्तंड
न खिलती रवि बिन स्वर्णिम धूप
तुम्हारे बिना प्राण, निष्प्राण
पका सा लगता मुझको रूप।

आज्ञा दे देते जो नाथ
समर में संग-संग लड़ साथ,
काल का मुखडा देती मोड
छोड़ती कभी रण में हाथ।

सुपावन शुभ्र सती की शक्ति
सुरक्षा करती स्वामी आज,
अनल-सा जलता निरख सतित्व
लौटते रीते कर यमराज।

सती का स्फुलिंग-सा तेज
जलाता वैरीदल के प्राण,
साक्षी सजग समय की दृष्टि
शास्त्र मे मिलते पुष्ट प्रमाण।

हाय! मेरा वैरी दुर्भाग्य
प्रतिज्ञा पावन अपनी तोड़,
भयकर कोलाहल के बीच
अकेला मुझे गए प्रिय छोड़!

अभागिन, अब अस्तित्व विहीन
सपदा सृष्टि सकल निस्सार,
मरुस्थल में तड़पे ज्यों मीन
मुझे दुख देता है ससार!

अमंगलकर्ता मंगलसूत्र
अलकृत आभूषण अभिशप्त,
करो के कगन पीत भुजंग
नूपुरों की रुनझुन संतृप्त!

एक वनिता बिन स्वामी दीन
तड़पती ज्यो जल के बिन मीन,
चन्द्रमा बिन रजनी का रूप
नयन का लगता सदा मलीन!

सजाओ चिता नाथ के साथ
प्रतीक्षा में रत होगे नाथ,
स्वर्ग में मिले ज्योति से ज्योति
जोड़ती पिताश्री मे हाथ!

शाश्वत् सत्य सुनो कौंतेय
अनश्वर। विधि का अटल विधान
अंत मे टूटा माधव मौन
शोक से मतिभ्रम अर्जुन जान।

आत्मा अजर-अमर अविनाश
क्षीण तन मन को करो निराश।
भला माटी से कैसा मोह?
मीत! मत मन को करो निराश।

सुपुत्री हृदय न करो विक्षुब्ध
तुम्हारा वदनीय वैधव्य,
गर्भ में भरतवश का अंश
भास्कर-सा भारत भवितव्य।

धीर क्षत्राणी धारो धर्म
न भूलो जननी का कर्तव्य,
दीप्त अभिमन्यु दृग का ज्योति
एक तेजस्वी सुत हो दिव्य!

त्याग दो अग्निदाह की आन
सहेजो अभिमन्यु का अंश,
पल्लवित गर्भाशय में पूत
बढ़ेगा भरतवंश का वंश!

गूँजती गहन गिरा गंभीर
धनन्जय यूँ न करो आक्रोश,
युधिष्टर-भीम, नकुल-सहदेव
अधिरथी सारे है निर्दोष।

जयश्री शिवशंकर की आज
जयदरथ को था जय वरदान,
आहुति प्राणों की दे पार्थ
बढाया पाण्डुवंश का मान!

तपस्या कर सौवीर नरेश-
पुजा नित ओउम नमो का मंत्र,
द्रोण ने रची नवल रणनीति
चक्रव्यूह निर्मित कर षड़यन्त्र।

उच्चरित महादेव जयकार
मुग्ध सुन हर्षित भोलेनाथ,
एक दिन रण में सिंधु नरेश
शक्ति हो मेरी तेरे हाथ।

असंभव अर्जुन की पर हार
पास पशुपति संहारक अस्त्र,
पराजित पाण्डव हो अवशेष
निरर्थक होंगे सारे शस्त्र।

एक दिन को दूँ जय-आशीष
विजय भव अवसर करूँ प्रदान,
तपस्या तेरी सफलीभूत
विजेता का होगा सम्मान।

चित्त को करो न और अधीर
समर का समझो सत्य यथार्थ,
महामृत्युंजय शक्ति अपार
पाण्डव बल खो बैठे पार्थ।

चक्रव्यूह रचना नव रणनीति
द्रोण रणकौशल भव विख्यात,
सुशर्मा रण गुंजित ललकार
मित्रवर अब न रही अज्ञात।

युद्ध से भेज हमें अति दूर
चक्रव्यूह कर डाला निर्माण,
आज व्यूह भेद सकेगा कौन?
किसे था व्यूह भेदन का ज्ञान?

अचल अभिमन्यु अति अवरोध
पूत वो धर्मराज की आस,
चक्रव्यूह भेदन विधि-विज्ञान
अकेले अभिमन्यु के पास

युधिष्टर बंदी बनते आज
दुर्जयी दुर्योधन के दास,
सुभद्रा सुत बल सीमा लाँघ
द्रोण गुरु आ न सके पर पास।

गर्व से उन्नत मेरा शीश
प्रशिक्षण-शिक्षण कृत्य कृतार्थ,
धन्य नवयौवन का बलिदान
अनुगृहीत भरतवंश है पार्थ।

द्रोण-कृप-कर्ण पराभव दंभ
महा मृत्युजन, जय वरदान,
पाण्डु की वंश सुरक्षा हेतु
दिया अभिमन्यु ने बलिदान।

सहन करता वो शूर सपूत
जयद्रथ की कैसे ललकार?
गरजता सिंधुराज का दर्प
मूक गह करता क्या स्वीकार।

वीर बालक का शर संघात
द्रोण के निष्फल अथक प्रयास,
गुरुवर धनुर्वेद विज्ञान
न छू पाया भ्राता की श्वास।

युधिष्ठर-भीम-नकुल-सहदेव
चक्रव्यूह कैसे करते भंग?
साथ शिवशंकर शक्ति अजेय
पाण्डव योद्धा अंग-अपंग!

सुभद्रा भगिनी मेरी धन्य!
कोख से जनमा शूर सपूत,
शौर्यता कार्तिकेय-सी देख
मृत्युंजय उमा सहित अभिभूत!

कलंकित कौरव कुल की कीर्ति
महरथी रण मे थे श्रीहीन,
कर्ण की धनुविद्या का गर्व
हो गया लज्जित आज मलीन!

वीर का युग-युग हो गुणगान
पुत्र पर अर्जुन कर अभिमान
धर्म क्षत्रिय कर निर्वाह
बढाया कौंतेय सम्मान!

चक्रव्यूह भेदा बिन विज्ञान
सुदर्शनधारी करे प्रणाम,
पराजित दुर्योधन का दंभ
वीरगति पा पहुँचा सुरधाम!

भुवन बंधन जड़ता अज्ञान
अनश्वर रहे न भू अनुबंध,
पार्थ प्रिय काट मोहमय पाश
निरर्थक वसुंधरा संबंध!

कर्म करता कर्ता-करतार
विधाता त्रिभुवन का आचार्य,
अभागा अहंकारवश मूढ़
मानता मनुज स्वयं का कार्य!

मोहमाया विभ्रम मनमीत
बंधु-बांधव भव बंधन व्यर्थ,
दृगों में निर्झर भग्न अतीत
धनन्जय समझ सत्य का अर्थ!

अलौकिक अधिनायक आचार्य
स्वपोषित अति अधर्म रणनीति,
क्षुब्ध दुर्योधन संग-कुसंग
भुलाई सत्य-धर्म की नीति!

अकेले अभिमन्यु के अस्त्र
टूटते जाते सारे शस्त्र,
अतिरथी कौरव दल भयभीत
टूट के मिल-जुल किया निरस्त्र!

निहत्थे थे बालक के हाथ
सुरक्षा को कर मे रथ चक्र,
जयद्रथ का आहत अपमान
भृकुटियाँ तनी हुई थी वक्र।

अनश्वर समय सदा गतिमान
नियति निर्माता करता कर्म
सर्वदा कर्म करो निष्काम
पार्थ! भू पर मानव का धर्म।

नीर निर्झर दृग बहता व्यर्थ
न लौटे पूत तुम्हारे पास,
तुम्हारे अश्रु छलकते देख-
करेगा कौरव कुल उपहास।

सुपुत्री तजो हृदय का शोक
अश्रु! अभिमन्यु का अपमान,
वीरगति देती उत्तम लोक
सुयश का युग-युग होता गान।

कौन अभिमन्यु सा रणवीर
गुरुवर विस्मित द्रोणाचार्य,
उत्तरे! उन्नत कर निज शीश
नियति निर्णय कर ले स्वीकार्य।

अभिमन्यु आँखों नीर अनर्थ
पूत का देवलोक में वास,
भीगते अर्जुन लोचन देख
जगे कौरवदल में उल्लास!

युधिष्ठर भीम नकुल सहदेव
भुलाओ सकल स्वयं अपमान,
भुला दो अर्जुन के अपशब्द
शोक सागर में डूबा ज्ञान।

विस्मरण विपदा करती धर्म
वेदना हरती बुद्धि-विवेक,
देह का अलग-अलग आकार
हृदय से पाँचों हो तुम एक।

विस्मरण वीरों करो विषाद
सहेजो साहस बल-बलवंत,
विजय वर ले, कल आए सूर्य
अधर्मी सिंधुराज का अंत!

सुना ओजस्वी स्वर आख्यान
तिरोहित पाण्डव कलुष प्रमाद,
प्रखर हो शुभ्र ज्ञान आलोक
तिमिरमय लोप असह अवसाद!

कृष्ण! शिवशंकर की सौगंध
अनल उगलेगे मेरे वाण,
न भागा कुरुक्षेत्र रण छोड
हरुँगा सिंधुराज के प्राण!

सामने हो यम-वरुण-कुबेर
सुरक्षा स्वयं करे देवेश,
प्रात परखोगे प्रबल प्रताप
दहकते वाणों को अखिलेश!

छुपे जा क्षितिज छोर के पार
भस्म कर डालूँ भू-आकाश,
फोड़ मैं अतल सकल पाताल
दुष्ट को भेजूँ यम के पास!

जयदरथ प्राणो को ले साथ
प्रभाकर कल होगा अवसान,
प्रतिज्ञा ले न सकी प्रतिशोध
पुत्र से मिले पिता के प्रान!

हाय! अभिमन्यु बाल निशस्त्र
करुणमय क्यो न हुए यमराज?
कौन भोगेगा भोग-विलास?
क्या करेगे पाण्डव ले राज?

सुने त्रिभुवन धनु की टंकार
प्रतिज्ञा सुन ले देव महेश,
अधूरा रहा हृदय-संकल्प
अग्नि मे निश्चय करूँ प्रवेश!